



एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 02, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2022)

www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

नेचुरल फार्मिंग

(अनिल कुल्हेरी, डॉ. एस.एस. राजपूत, प्रमोद, अनिता एवं केसर मल चौधरी)

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर

संवादी लेखक का ईमेल पता: kulherianil@gmail.com

नेचुरल फार्मिंग:

- ❖ कृषि-पारिस्थितिकी के मानकों पर आधारित यह एक विविध कृषि प्रणाली है जो फसलों, पेड़ों और पशुधन को एकीकृत करती है, जिससे कार्यात्मक जैवविविधता के इष्टतम उपयोग की अनुमति मिलती है।
- ❖ इसे "रसायन मुक्त कृषि और पशुधन आधारित" के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।
- ❖ यह मिट्टी की उर्वरता और पर्यावरणीय स्वास्थ्य को बढ़ाने तथा ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने या न्यून करने जैसे कई अन्य लाभ प्रदान करते हुए किसानों की आय बढ़ाने में सहायक है।
- ❖ कृषि के इस दृष्टिकोण को एक जापानी किसान और दार्शनिक मासानोबू फुकुओका (Masanobu Fukuoka) ने 1975 में अपनी पुस्तक द वन-स्ट्रॉ रेवोल्यूशन में पेश किया था।
- ❖ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्राकृतिक खेती को पुनर्योजी कृषि का एक रूप माना जाता है, जो ग्रह को बचाने के लिये एक प्रमुख रणनीति है।
- ❖ भारत में परंपरागत कृषि विकास योजना (PKVY) के तहत प्राकृतिक खेती को भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति कार्यक्रम (BPKP) के रूप में बढ़ावा दिया जाता है।
- ❖ BPKP योजना का उद्देश्य बाहर से खरीदे जाने वाले आदानों के आयात को कम कर पारंपरिक स्वदेशी प्रथाओं को बढ़ावा देना है।

नेचुरल फार्मिंग का महत्त्व:

- ❖ **उत्पादन की न्यूनतम लागत:** इसे रोजगार बढ़ाने और ग्रामीण विकास के साथ एक लागत-प्रभावी कृषि पद्धति प्रथा माना जाता है।
- ❖ **बेहतर स्वास्थ्य सुनिश्चित करना:** चूंकि प्राकृतिक खेती में किसी भी सिंथेटिक रसायन का उपयोग नहीं किया जाता है, इसलिये स्वास्थ्य जोखिम और खतरे का भय नहीं रहता। साथ ही भोजन में उच्च पोषक तत्व होने से यह बेहतर स्वास्थ्य लाभ प्रदान करती है।
- ❖ **रोजगार सृजन:** प्राकृतिक खेती आगत उद्यमों, मूल्यवर्द्धन, स्थानीय क्षेत्रों में विपणन आदि के कारण रोजगार सृजन करती है। प्राकृतिक खेती में अधिशेष का गाँव में ही निवेश किया जाता है। चूंकि इसमें रोजगार सृजन की क्षमता है, जिससे ग्रामीण युवाओं का पलायन रुकेगा।
- ❖ **पर्यावरण संरक्षण:** यह बेहतर मृदा जीव विज्ञान, बेहतर कृषि जैव विविधता और बहुत छोटे कार्बन एवं नाइट्रोजन पद चिह्नों के साथ जल का अधिक न्याय संगत उपयोग सुनिश्चित करती है।
- ❖ **पशुधन संधारणीयता:** कृषि प्रणाली में पशुधन का एकीकरण प्राकृतिक खेती में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और पारिस्थितिकी तंत्र को बहाल करने में मदद करता है। जीवामृत और बीजामृत जैसे पर्यावरण के अनुकूल जैव आदान गाय के गोबर एवं मूत्र तथा अन्य प्राकृतिक उत्पादों से तैयार किये जाते हैं।
- ❖ **लचीलापन:** यह बेहतर मृदा जीव विज्ञान, बेहतर कृषि जैव विविधता और बहुत छोटे कार्बन एवं नाइट्रोजन पदचिह्नों के साथ जल का अधिक न्याय संगत उपयोग सुनिश्चित करती है। NF मौसम

की चरम सीमाओं के खिलाफ फसलों को लचीलापन प्रदान करके किसानों पर इसका सकारात्मक प्रभाव प्रदर्शित करता है।

प्राकृतिक खेती से संबंधित चुनौतियाँ:

- ❖ **पैदावार में गिरावट:** सिक्किम (भारत का पहला जैविक राज्य) में जैविक खेती में परिवर्तन के बाद पैदावार में कुछ गिरावट देखी गई है। कुछ वर्षों के बाद भी शून्य-बजट प्राकृतिक खेती के उत्पादन में गिरावट के चलते कई किसान पारंपरिक खेती में लौट आए हैं।
- ❖ **उत्पादकता और आय बढ़ाने में असमर्थ:** ZBNF ने निश्चित रूप से मृदा की उर्वरता को बनाए रखने में मदद की है, जबकि उत्पादकता और किसानों की आय बढ़ाने में इसकी भूमिका अभी तक निर्णायक नहीं है।
- ❖ **प्राकृतिक आदानों की उपलब्धता का अभाव:** किसान अक्सर आसानी से उपलब्ध प्राकृतिक आदानों की कमी का हवाला देते हैं जो रसायन मुक्त कृषि में संक्रमण के लिये एक बाधा के रूप में हैं। प्रत्येक किसान के पास अपना आदान बढ़ाने हेतु समय, धैर्य या श्रम नहीं होता है।
- ❖ **पोषक तत्वों की कमी:** नेचर सस्टेनेबिलिटी के एक अध्ययन में कहा गया है कि प्राकृतिक आदानों का पोषक मूल्य कम आदान वाले खेतों (कम मात्रा में उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग करने वाले खेतों) में उपयोग किये जाने वाले रसायनिक उर्वरकों के मूल्य के समान है, लेकिन उच्च आदान वाले खेतों में यह कम है। जब इस तरह से पोषक तत्वों की कमी बड़े पैमाने पर होती है, तो यह वर्षों में उपज में बाधा उत्पन्न कर सकता है, संभावित रूप से खाद्य सुरक्षा चिंताओं का कारण बन सकता है।